JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

वर्ष : 10 • अंक 2

जनवरी-जून 2021

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List

ISSN 2278-4632

संपादक

डॉ. बी. एल. भादानी

प्रोफेसर

प्रबंध संपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

प्रकाशकीय एवं विज्ञापन कार्यालय :
सचिव, मरुभूमि शोध संस्थान, श्रीडूँगरगढ़-331803 (बीकानेर) राज.

आजीवन सदस्यता 3000 रु.
सहयोग दर :
(व्यक्तिगत) एक अंक 100 रुपये ❑ प्रति वर्ष 200 रुपये
(संस्था) एक अंक 150 रुपये ❑ प्रति वर्ष 300 रुपये
बाहरी चैक के लिए 25 रुपये अतिरिक्त

आजीवन शुल्क संस्था के निम्न खाते में सीधा ट्रांसफर करके हमें बताने की कृपा करें।

1. **Punjab National Bank**
2. **Sri Dungargarh**
3. **मरुभूमि शोध संस्थान**
4. **खाता सं. 3604000100174114**
5. **IFSC Code - PUNB0360400**

ड्राफ्ट/नकद भुगतान भेजने का पता :

श्याम महर्षि
सचिव :
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति)
श्रीडूँगरगढ़ 331803 (बीकानेर) राज.
फोन-01565-222670
आलेख सीडी में या निम्न ईमेल पर प्रेषित किया जा सकता है।

आवरण पेंटिंग : रामकुमार भादाणी

सम्पादकीय कार्यालय :
डॉ. बी.एल. भादानी
रांगड़ी चौक, बीकानेर 334001 (राज.) मो. 9950678920

junikhyat.mss@gmail.com • bbhadani.amu@gmail.com

सावधान

जूनी ख्यात (अर्द्ध वार्षिक) दिसम्बर 1994 ई. से नियमित Print Form में प्रकाशित हो रही है। जून 2019 में 'UGC Care List' (S.N. 220) में सामाजिक-विज्ञान की श्रेणी में सम्मिलित करली गई है। हमारी पत्रिका Online प्रकाशित नहीं होती है।

जूनी ख्यात नाम से ही एक फर्जी पत्रिका (Cloned Journal) ऑन लाइन निकाली जा रही है जो हमारे ही ISSN एवं यू.जी.सी. केयर लिस्ट की संख्या को उपयोग में ले रही है। इस सम्बन्ध में **यू.जी.सी.** ने 23-7-2020 को 'Cloned Journal' की एक सूची जारी की है उसमें अन्य पत्रिकाओं के साथ **जूनी ख्यात** का भी नाम है। यह पत्रिका निम्न वेबसाइट पर प्रत्येक विषय के शोध पत्र आमंत्रित करती है।

Juni khyat Journal

Language	:	English & Hindi
Publisher		NA
ISSNo.		2278-4632
URL http	:	www.junikhyat.com

हमारी पत्रिका **मरुभूमि शोध संस्थान, श्रीडूँगरगढ़** द्वारा प्रकाशित की जाती है। अब 'नकली पत्रिका' बी.एल. भादानी, संपादक के नाम का भी उपयोग कर रही है जो एक आपराधिक कृत्य है।

इसमें तथाकथित रूप से प्रकाशित आलेख का कोई महत्त्व भी नहीं है। इसलिए शोधार्थियों से सावधान रहने की अपील की जाती है।

बी.एल. भादानी
संपादक

Sl.No.	Journal No.	Title	Publisher	ISSN
220		JUNI KHYAT		2278-4632

UGC Journal Details

Name of the Journal : **JUNI KHYAT (Print Form)**
ISSN Number : 2278-4632
e-ISSN Number : NA
Source : **UGC**
Discipline : **Social Science**
Subject : **Social Sciences (all)**
Focus Subject : Cultural Studies
Publisher : Marubhumi Shodh Sansthan, Sri Dungargarh (Bikaner)

मेड़ता शहर (नागौर) स्थित जैन आदिश्वर मन्दिर में प्रतिष्ठापित भित्ति लेख

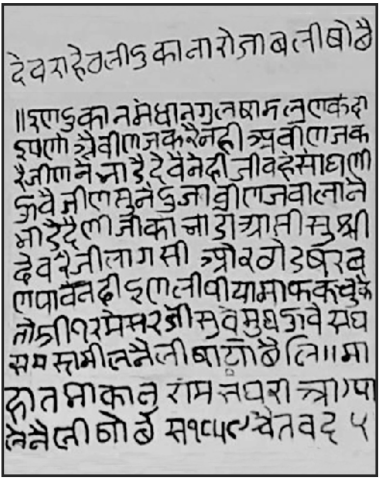

देवरा हेठली दुकाना रो जाब लीखो छै
।। इण दुकान मे धान गुल खांड लुण कंदों
इ पणो अै वीणज करै नही अै वीणज क
रे जीण ने भाड़े देवे नही जीव हंसा घणी
हुवे जीण सु नै दुजा वीणजवाला नै
भाड़े देणी जीका भाड़ो आसी सु श्री
देवरे जी लागसी ओर ठोड़ खरच
ण पावे नही इण लीखीया माफक चुकै
तो श्री 1 रमेसरजी सु वे मुध हुवे सघ
समस्त मील नै लीखायो छै लि।। मा
हातमा कालुराम संघ री आग्या
ले नै लीखो छै स 1859 चैत वद 5

भावार्थ

यह भित्ति लेख राजस्थान के नागौर जिले के प्राचीन शहर मेड़ता में स्थित भगवान आदिश्वर अर्थात प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव को समर्पित मंदिर के परिसर में प्रतिष्ठापित है। यह जैन मंदिर लगभग पांच सौ वर्ष पुराना है। यहाँ स्थापित यह लेख मंदिर की भीतरी दीवार पर उत्कीर्ण है। इस की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह लेख वि.सं. 1859/1802 ई. के दौरान मंदिर के अधीनस्थ एवं परिसर में स्थित दुकानों से प्राप्त होने वाले किराये सम्बन्धी सूचना पर प्रकाश डालता है। इस भित्ति लेख में जैन परम्परानुसार, अहिंसा की पालना करते हुए जिन व्यवसायों (यथा धान, गुड़, शक्कर, नमक एवं मिठाई) में जीव हत्या होने की सम्भावना हो, ऐसे व्यवसाय में संलग्न व्यापारियों को दुकान किराये पर न देने की चेतावनी उल्लेखित है। इस अभिलेखीय आदेश को महात्मा कालूराम द्वारा जैन संघ की आज्ञार्थ लिखा गया था, जिसमें स्पष्टत: उल्लेख है कि उक्त दुकानों से प्राप्त होने वाली किराया राशि को मंदिर के निमित्त ही खर्च किया जायेगा। यह लेख जैन धर्म के आधारभूत सिद्धान्त 'अहिंसा' का सन्देश देना वाला पश्चिमी राजस्थान का दुर्लभ भित्ति लेख है।

अनुवादक : **डॉ. राजेन्द्र कुमार**, बीकानेर

संपादकीय

हमारी पत्रिका के यू.जी.सी. केयर-लिस्ट (सामाजिक विज्ञान श्रेणी) में आने के पश्चात् इसके अकादमिक स्तर को बनाए रखने के लिए हमारा दायित्व पहले से अधिक बढ़ गया है। इसके लिए हमने संपादक मंडल में नवीन नाम जोड़े हैं जो विषय-विशेषज्ञ हैं। शोध आलेखों पर विशेषज्ञों द्वारा सुझाए गए सुझावों को लेखक को प्रेषित कर दिया जाता है। विशेषज्ञों द्वारा सुझाए गए सुझावों को समाविष्ट करने के पश्चात् ही पत्रिका में स्थान दिया जाता है।

भारत के सुप्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफेसर हरबंस मुखिया ने संपादक मंडल में अपने नाम को सम्मिलित करने की अनुमति प्रदान करके जो सहयोग किया है उसके लिए पत्रिका परिवार आभारी है। इसी प्रकार डक्कन कॉलेज (डीम्ड विश्वविद्यालय) के पूर्व उपकुलपति प्रोफेसर वसंत शिंदे एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कोर्डिनेटर प्रोफेसर सीताराम दुबे के आभारी हैं जिन्होंने पत्रिका के अकादमिक स्तर को बनाए रखने हेतु पूर्ण सहयोग के लिए आश्वस्त किया है जिसके लिए पत्रिका परिवार की ओर से आभार।

राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर बी.एम.शर्मा (राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर) ने पत्रिका के साथ सहयोग करने के लिए आश्वासन दिया है जिसके लिए उनका हृदय से आभार। शिक्षाशास्त्र के विशेषज्ञ प्रोफेसर चन्द्रपाल सिंह चौहान अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के चैयरमेन एवं सोशियल साईन्सेस फैकल्टी के डीन रहे हैं। संस्था परिवार आपका आभार व्यक्त करती है। इसी विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र के विद्वान प्रोफेसर अब्दुल मतीन भी संपादक मंडल के सदस्य हैं एवं समय समय पर सुझाव देते रहते हैं।

जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एस. इनायत अली ज़ैदी, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के प्रोफेसर बी.के. शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय के पर्यावरण इतिहास विशेषज्ञ प्रोफेसर विपुलसिंह एवं साहित्य संस्थान, इंस्टिटयूट ऑफ राजस्थान स्टडीज, जनार्दन राय नागर विद्यापीठ, उदयपुर (डीम्ड विश्वविद्यालय) के प्रोफेसर जीवनसिंह खरकवाल के भी आभारी हैं।

शोध आलेखकों से निवदेन है कि वे अपना आलेख हमारी पत्रिका के प्रारूप के अनुकूल भेजें। आलेख रिव्यू के लिए सम्बद्ध विशेषज्ञ के पास भेजा जाता है। उसके वापिस आने में तीन से चार महीने लग जाते हैं। इसलिए तब तक लेखक को प्रतीक्षा करनी होती है। जब विशेषज्ञ की राय उपलब्ध हो जायेगी उसके पश्चात ही आलेख के प्रकाशन के सम्बन्ध में हम निश्चित तौर पर कुछ कहने की स्थिति में होंगे। इस सम्बन्ध में आपसे सहयोग की अपेक्षा है।

डॉ. बी. एल. भादानी

सम्पादक

विशेष : **जो लेखक अपनी पत्रिका रजिस्टर्ड डाक से मंगवाना चाहते हैं वे प्रत्येक अंक के हिसाब से चार अंक के 120 रुपये भिजवाने का कष्ट करें।**

अनुक्रम

- The Unexplored Megalithic Sites and Burial Practices of Balrampur Region (Chhattisgarh) 11
  - *Dr. Nitesh Kumar Mishra, Anshu Mala Tirkey and Baleshwar Kumar Besra*
- Narrative Discourse and Shifting Image a Local God : Pabu 31
  - *Dr. Rajshree Dhali*
- Attitude of State towards Urban Growth of Eighteenth Century Rajasthan 42
  - *Shabir Ahmad Punzoo*
- Environmental Awareness of Higher Secondary School Students In Bankura District, West Bengal 49
  - *Dr. Nandini Banerjee, Dr. Amarnath Das* and *Rimpa Betal*
- Green School Leadership in India : The Transforming Facet of Goal-Oriented School Administration 71
  - *Ms. Rekha Verma, Dr. Naveen Sharma*

- Finding Space in a Traditional Society : The *Bheel* Girls of Jaisalmer 91
  - *Dr. Jaya Kritika Ojha*
- A Study on Effect of Covid-19 Pandemic on Economic Condition of Traditional Marine Fishers 100
  - *Pradip Roy, Dr. Chetan Chaudhari*
- Inspiring Change Through Women Empowerment 111
  - *Anam Tahir Hashmi, Mohd Shakir*
- आभिलेखिक उद्वाचन में पाठ-भेद : समस्याएँ एवं समाधान 125
  - *प्रो. सीताराम दुबे*
- पौराणिक आख्यानों एवं लोककथाओं में किन्नर विमर्श 132
  - *डॉ. निशा यादव*
- प्रारम्भिक मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति : राजस्थान के अभिलेखीय साक्ष्यों के विशेष संदर्भ में 140
  - *डॉ. रजनी शर्मा*
- खांप पंचायतों की मिथक और वास्तविकता : पंचायत और खांप पंचायत का ऐतिहासिक विश्लेषण 147
  - *डॉ. सूरजभान भारद्वाज* • *अनु. डॉ. राजेन्द्र कुमार*
- मध्यकालीन बुन्देलखण्ड के कला संस्थानों (*अखाड़ों*) का वास्तुशिल्पीय अध्ययन 181
  - *डॉ. सफ़िया ख़ान*
- 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य हीरे की खदानों में कार्यरत खनिक वर्ग : एक अध्ययन 192
  - *मनीषा मिश्रा* • *डॉ. अमिता शुक्ला*

• प्रारंभिक आधुनिक राजस्थान संबंधित इतिहास लेखन : एक सर्वेक्षण 199
• *डॉ. मयंक कुमार*

• साहित्य का सत्य बनाम इतिहास के तथ्य : स्रोत, सृजनात्मकता तथा कथनात्मक 222
• *डॉ. पंकज झा*

• लोक स्थापत्य के विविध आयाम 233
• *डॉ. ब्रजरतन जोशी*

• मेवाड़ और मारवाड़ में गणगौर उत्सव : ऐतिहासिक अध्ययन 241
• *डॉ. सुशीला शक्तावत*

• बीकानेर में पुष्टि भक्ति परम्परा का विकास 253
• *शिवकुमार व्यास*

• राजस्थानी साहित्य की अनमोल ऐतिहासिक धरोहर : कृषि कहावतें 264
• *डॉ. विष्णु प्रिया टेमानी*

• राजस्थान की विलुप्त होती वाचिक लोक परम्पराएं : ऐतिहासिक विवेचन 270
• *डॉ. सुरेश सिंह राठौड़*

• प्राकृतिक संसाधनों का औपनिवेशीकरण और पर्यावरणीय इतिहास लेखन 283
• *सोनू कुमार गुप्ता*

• भाषा, संस्कृति एवं समाज का पैरोकार : हिन्दी सिनेमा 293
• *डॉ. मीता शर्मा*

• बंगाल में मजदूर आन्दोलन एवं उपन्यास लेखन—विवेचनात्मक अध्ययन 303
• *डॉ. विष्णुदत्त जोशी*

- शिक्षाशास्त्र विषय में उपलब्धि परीक्षण का निर्माण एवं मानकीकरण 308
  - *डॉ. सुनीता सिंह एवं नितेश कुमार मौर्य*
- झझू (कोलायत, बीकानेर) पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट-2 332
  - *डॉ. रीतेश व्यास*
- रामकुमार भादाणी : थार रेगिस्तान की विशिष्ट कला 'बीकानेर गोल्डन आर्ट' के प्रणेता 338
  - *डॉ. राजेन्द्र कुमार*
- श्रद्धांजलि : डॉ. जिब्राईल 341
  - *डॉ. राजेन्द्र कुमार*